शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

देव नागरी लिपि के पांच उद्देश्य

विनोबा

संस्कृत लिपि या देवनागरी दक्षिणवालों के लिए अरुचिकर होगी, यह बिलकुल गलत कल्पना है। अरुचिकरण हो सकती है गलतफहमी के कारण। कुछ लोग देवनागरी को 'हिन्दी लिपि' कहते हैं। लेकिन उसका हिन्दी के साथ कुछ भी संबंध नहीं है। मराठी भी उसमें लिखी जाती है, संस्कृत लिखी जाती है, अर्धमागधी लिखी जाती है, पाली, नेपाली लिखी जाती है, यानी प्राचीन भाषाओं में तीन महत्व की बड़ी भाषाएं संस्कृत, अर्धमागधी और पाली देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। और अर्वाचीन भाषाओं में मराठी और नेपाली तो हैं ही। बाकी उत्तर भारत की सब भाषाएं, थोड़े-थोड़े फरक के साथ नागरी में ही लिखी जाती हैं। इस वास्ते यह हिन्दी लिपि है, यह भ्रम ही है। हिन्दी का देवनागरी से कतई ताल्लुक नहीं। देवनागरी सारे भारत को जोड़ने वाली लिपि है।

1 मेरा पहला उद्देश्य है कि दक्षिण की चारों भाषाएं नजदीक आएं। अब देखिए, कन्नड़ के उत्तम साहित्यकार हैं बेंद्रे, पुट्टप्पा, कारंत आदि। इनका कुछ भी साहित्य तमिल वाले पढ़ते नहीं, अगरचे तमिल और कन्नड़ बिलकुल नजदीक हैं। और तमिल में जो अनेक ग्रंथ हैं वे कन्नड़वाले नहीं पढ़ते। इस वास्ते मैं चाहता हूं कि प्रथम दक्षिण की भाषाएं नजदीक आ जाएं। नागरी से बहुत जल्दी उनकी एकता हो जाएगी।

2 सारा उत्तर भारत एक हो जाए। नाहक अलग-अलग लिपि न चलायें। उड़िया का 'क' देखिए , उसका इतना बड़ा ढांच है। फेटा बड़ा है। पहचानने की जो चीज है क, वह है छोटा। नागरी में 'क' बड़ा हो जाएगा, इतनी ही बात है। नागरी से यह सारा उत्तर भारत एक हो जाएगा।

3 दक्षिण और उत्तर भारत एक हो जाएं।

4 भारत और एशिया एक हो जाएं। 5 भारत और विश्व एक हो जाएं। यह पांचवां कार्यक्रम जब शुरू होगा, जहां विश्व की एकता लाने की बात होगी, वहां मैं नागरी प्लस रोमन ऐसा मान सकता हूं।

देवनागरी क्यों कहते हैं ?

संस्कृत में काशी को देवनागरी कहते हैं। ब्राह्मी आदि भिन्न-भिन्न लिपियों का उपयोग करने वाले सभी प्राकृत भाषा वाले एक बार देवनागरी में यानी काशी में इकट्ठा हुए। वहां सब लोगों का निर्णय हुआ कि इसके आगे हम संस्कृत के लिए एक देवनागरी लिपि ही चलायेंगे। वहां मराठी वाले थे, उन्होंने अपने लिए भी उसे स्वीकार किया और हिन्दी वाले थे उन्होंने भी मंजूर किया। बाकी के लोगों ने भी संस्कृत के लिए कबूल किया। वह देवनागरी में मान्य हुई इस वास्ते उसका नाम देवनागरी है।

सर्वोदय वालों के प्रयत्न से अगर देवनागरी भारत भर में मान्य हो जाए तो वह सर्वनागरी बनेगी। देवनागरी के बदले उसका नाम सर्वनागरी हो जाएगा। स्वीकार

प्रथम बाद सुधार

बाबा (विनोबा) नागरी लिपि पर जोर देता है, वह भी अभिमान के कारण नहीं है। वह निरभिमान वृत्ति से ही सोचता है। सोचने पर मालूम होता है कि नागरी लिपि काफी पूर्ण लिपि है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसमें सुधार की गुंजाइश ही नहीं है। कुछ सुधार तो करने पड़ेंगे। किंतु प्रथम सुधार नहीं, प्रथम स्वीकार। स्वीकार के बाद सुधार। नही ंतो क्या होगा, यह गांधीजी ने कहा था - बाबाना बेउ बगडे'। यदि हम लिपि सुधारने में लगेंगे और बाद में देवनागरी भारत में चले ऐसा सोचेंगे तो वह चलने वाली है नहीं। क्योंकि सुधार के फेर में पड़ेंगे तो दोनों बिगड़ेंगे। इस वास्ते पहले सारा भारत स्वीकार करे, फिर सुधार करना कठित नहीं। वह किया जा सकेगा। बाबा ने निरभिमान और निरहंकार वृत्ति से ही देवनागरी लिपि सुझायी है।

(शेषामृत, नागरी लिपि: विनोबा साहित्य खंड 20)